وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

और जब वो उस कुरआन को सुनते हैं जो रसूल की तरफ उतारा गया तो आप उन की आँखों को

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ

आंसुओं से बेहती हुइ देखेंगे उस हक़ की वजह से जो उन्हों ने पेहचाना। वो केहते हैं के

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَمَا لَنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, इस लिए आप हमें शहादत देने वालों के साथ लिख दीजिए। और हमें क्या हुवा

لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ

के हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, हालांके हम

اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَاَثَابَهُمُ

उम्मीद रखते हैं के हमारा रब हमें सालेह कौम के साथ शामिल कर दे। फिर अल्लाह ने

اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

उन के इस केहने की वजह से बदले में ऐसी जन्नतें दीं, जिन के नीचे नेहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَالَّذِيْنَ

वो उन में हमेशा रहेंगे। और ये नेकी करने वालों का बदला है। और जिन लोगों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۸۶﴾ ع

कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोज़खी हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ

ऐ ईमान वालो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों को हराम मत करो जो अल्लाह ने तुम्हारे

اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ

लिए हलाल की हैं और तुम हद से आगे मत बढ़ो। यक़ीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪

महब्बत नहीं करते। और तुम अल्लाह तआला की दी हुई हलाल व पाकीज़ा रोज़ी को खाओ।

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ

और तुम अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो। अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा

اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا

नहीं करेंगे तुम्हारी लग़्व क़स्मों में, लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा करेंगे

عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ

तुम्हारी पुख्ता कस्मों में। फिर उस का कफ्फारा दस मिस्कीन को खाना

مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ

खिलाना है उस दरमियानी खाने में से जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन को कपड़ा देना है

اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ

या एक गुलाम आज़ाद करना है। फिर जो उस को न पाए तो तीन दिन के रोज़े हैं।

ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا

ये तुम्हारी क़स्मों का कफ्फारा है जब तुम क़सम खा बैठो। और तुम अपनी कस्मों

اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ

की हिफाज़त करो। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करते हैं ताके तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ

शुक्र अदा करो। ऐ ईमान वालो! शराब

وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ

और जुवा और बुत और जुवे के तीर गन्दगी, शैतान के कामों में

الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ

से हैं, इस लिए तुम उन से बचो ताके तुम फलाह पाओ। शैतान तो सिर्फ ये

الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ

चाहता है के शराब और जुवे की वजह से तुम्हारे दरमियान

فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

अदावत और बुग्ज़ डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद से

وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ

और नमाज़ से रोक दे। क्या फिर तुम बाज़ आते हो? और तुम अल्लाह की इताअत करो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ

और रसूल की इताअत करो और बचते रहो। फिर अगर तुम मुंह फेर लोगे

فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۹۲﴾ لَيْسَ

तो जान लो के हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। उन लोगों

عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ

पर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन पर कोई गुनाह नहीं है

فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

उस में जो वो पेहले खा चुके जब के वो मुत्तक़ी रहे और ईमान लाए और नेक अमल करते रहे,

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ

फिर वो मुत्तक़ी रहे और ईमान लाए, फिर मुत्तक़ी रहे और नेकोकार रहे। और अल्लाह

ع ۱۲ ۲ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ

नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर

اللّٰهُ بِشَیْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ

आज़माएंगे किसी क़दर शिकार के ज़रिए जिन को पहोंचते होंगे तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े,

لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ

इस लिए ताके अल्लाह मालूम करे उस शख्स को जो अल्लाह से डरता है बग़ैर देखे। फिर भी उस के बाद जो ज़्यादती

ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا

करेगा तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। ऐ ईमान वालो! तुम शिकार को मत क़त्ल

الصَّيْدَ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا

करो इस हाल में के तुम मुहरिम हो। और जो तुम में से उस को क़त्ल करेगा जान बूझ कर

فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ

तो बदला देना है उसी जैसा चौपाया जो उस ने क़त्ल किया, जिस का फैसला करेंगे तुम में से दो आदिल

مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ

आदमी, जो हदी बन कर काबे को पहोंचने वाली हो, या कफ्फारा देना है मिस्कीनों का खाना

اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا

या उस के बराबर रोज़े रखने हैं ताके वो अपने गुनाह के वबाल को चखे। अल्लाह ने

اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ

मुआफ कर दिया उस को जो पेहले हो चुका। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो अल्लाह उस से इन्तिक़ाम लेंगे।

وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। तुम्हारे लिए हलाल किया गया समन्दर का शिकार

وَ طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

और उस का खाना तुम्हारे फाइदे के लिए और मुसाफिरों के लिए। और तुम पर हराम किया गया

صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

खुश्की का शिकार जब तक तुम मुहरिम हो। और उस अल्लाह से डरो

اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ

जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। अल्लाह ने काबे को हुरमत वाला घर

الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ

बनाया, इन्सानों के क़ियाम का ज़रिया बनाया, और अल्लाह ने हुरमत वाले महीने और हदी के जानवरों को

وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا

और उन के गले में पड़े हुए पट्टों को (अमन का ज़रिया बनाया)। ये इस लिए ताके तुम जान लो के अल्लाह जानता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

उस को जो आसमानों और ज़मीन में है और ये के अल्लाह हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ

जानने वाले हैं। जान लो के यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं और ये के अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ

बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। रसूल के ज़िम्मे नहीं है मगर पहोंचा देना। और अल्लाह

يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي

खूब जानता है उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए के नापाक और

الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا

पाकीज़ा दोनों बराबर नहीं हो सकते अगर्चे गन्दी चीज़ की कसरत तुझे अच्छी लगे। तो अल्लाह से

اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا ع ١٣ ٣

डरो ऐ अक़्ल वालो! ताके फलाह पाओ। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ

ईमान वालो! बहोत सी चीज़ों के मुतअल्लिक़ सवाल मत करो के अगर वो तुम्हारे सामने ज़ाहिर की जाएं

تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْئَلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

तो तुम्हें बुरी लगें। और अगर सवाल करोगे उन चीज़ों के मुतअल्लिक़ जिस वक़्त कुरआन नाज़िल किया जा रहा है

تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾

तो वो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएंगी। साबिक़ा सवालात अल्लाह ने मुआफ कर दिए। और अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا

तुम से पेहले एक क़ौम ने उन चीज़ों का सवाल किया, फिर वो उस के साथ

كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ

कुफ्र करने वाले बन गए। अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा

وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और न वसीला और न हाम, लेकिन वो लोग जो काफिर हैं

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और उन में से अक्सर अक़्ल नहीं रखते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम आओ उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा

وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ

और रसूल की तरफ तो वो केहते हैं के हमारे लिए काफी है वो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया।

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

क्या अगर्चे उन के बाप दादा कुछ भी जानते नहीं थे और हिदायतयाफ्ता नहीं थे?

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फिक्र करो। तुम्हें ज़रर नहीं दे सकता

مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا

वो शख्स जो गुमराह हो गया जब तुम हिदायतयाफ्ता रहोगे। अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है,

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों के मुतअल्लिक़ जो तुम करते थे। ऐ ईमान वालो!

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ

तुम्हारे दरमियान की गवाही जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाए, तो

الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

वसीय्यत के वक़्त तुम में से दो आदिल आदमी हैं या तुम्हारे अलावा में से दो,

اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ

अगर तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत

الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

पहोंचे। तो तुम उन दोनों गवाहों को रोक लो नमाज़ के बाद, फिर वो अल्लाह की क़सम खाएं

اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ

अगर तुम शक करो, के हम इस क़सम को किसी क़ीमत पर नहीं बेच रहे, अगर्चे क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो,

وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝۱۰۶ فَاِنْ عُثِرَ

और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं। यक़ीनन तब तो हम गुनेहगारों में से बन जाएंगे। फिर अगर इत्तिला

عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا

मिल जाए इस बात की के वो दोनों (क़सम खाने वाले) गुनाह के मुस्तहिक़ हुए हैं (हक़ दबा कर के) तो फिर दूसरे दो आदमी

مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

मय्यित के क़रीबी रिश्तेदार उन के क़ाइम मुक़ाम हों उन में से जिन का हक़ दबा है, फिर वो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं

لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ

के यक़ीनन हमारी गवाही उन (पेहले वालों) की गवाही से ज़्यादा सच्ची है और हम ने ज़्यादती नहीं की। तब तो

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۰۷ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ

हम ही कुसूरवार बन जाएंगे। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के वो गवाही को अदा करें

عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ

उस के तरीक़े पर या वो डरें इस से के उन की क़स्मों के बाद दूसरी क़स्में ली जाएंगी।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

और तुम अल्लाह से डरो और सुनो। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं

الْفٰسِقِيْنَ ۝۱۰۸ يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ ع ۱۴ ۲

देते। जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेंगे, फिर पूछेंगे के तुम्हें क्या

اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝۱۰۹

जवाब दिया गया? वो कहेंगे के हमें मालूम नहीं। यक़ीनन तू ही ग़ैब की चीज़ों को जानने वाला है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِىْ

जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)! याद करो मेरी उस नेअमत को

وقف لازم

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۟ قف

जो आप पर हुई और आप की वालिदा पर। जब के मैं ने तुम्हारी ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए।

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ

तुम इन्सानों से कलाम करते थे गेहवारे में और बड़ी उम्र में। और जब मैं ने

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी। और जब तुम

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا

मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाते थे मेरे हुक्म से, फिर तुम उस में फूँक मारते थे,

فَتَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ

फिर वो उड़ता हुवा परिन्दा बन जाता था मेरे हुक्म से, और तुम नाबीना और बर्स वाले को मेरे हुक्म से अच्छा

بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ

करते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से (ज़िन्दा कर के) निकालते थे। और जब मैं ने बनी

اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ

इस्राईल को तुम से रोका जब आप उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन में से

كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾ وَاِذْ

काफिरों ने कहा बस, ये तो खुला जादू है। और जब

اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا

मैं ने वही की हवारीयीन की तरफ के तुम मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ। तो उन्हों ने कहा

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

के हम ईमान ले आए और आप गवाह रहिए के हम मुसलमान हैं। जब के हवारीयीन ने कहा

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप का रब इस की ताक़त रखता है के हमारे ऊपर आसमान से

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۭ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

माइदा (भरा हुवा दस्तरख्वान) उतारे। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह से डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ

मोमिन हो। उन्हों ने कहा के हम ये चाहते हैं के उस से खाएं और हमारे दिल

قُلُوْبُنَا وَ نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَ نَكُوْنَ عَلَيْهَا

मुतमइन हों और मालूम कर लें के आप ने हम से सच बोला है और हम उस पर गवाही देने

مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ الربع

वालों में से हो जाएं। ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा ऐ अल्लाह!

رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا

ऐ हमारे रब! तू हम पर आसमान से भरा हुवा दस्तरख्वान उतार जो हमारे

عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

अगले और पिछलों के लिए खुशी का बाइस बने और तेरी तरफ से निशानी हो। और आप हमें रोज़ी दीजिए,

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ

और आप बेहतरीन रोज़ी देने वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के मैं उसे उतारूंगा तुम पर।

فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا

लेकिन उस के बाद तुम में से जो कुफ्र करेगा तो मैं उसे ऐसा अज़ाब दूंगा के

لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ ع ٥

जहान वालों में से किसी को वो अज़ाब नहीं दूंगा। और जब अल्लाह ने फरमाया के

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप ने इन्सानों से कहा था के तुम मुझे

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ

और मेरी माँ को अल्लाह को छोड़ कर दो माबूद बना लो। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के आप पाक हैं, मेरे लिए

لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

मुनासिब नहीं था के मैं कहूं वो जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने वो कहा होता तो यक़ीनन

عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ لَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ؕ

आप को मालूम होता। (क्यूं के) आप जानते हैं उस को जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता उस को जो आप के जी में है।

اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّآ

यक़ीनन आप तमाम छुपी हुई चीज़ों को खूब जानने वाले हैं। मैं ने तो उन से नहीं कहा मगर

مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ

वही जिस का आप ने मुझे हुक्म दिया के तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है। और मैं

عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ

उन पर गवाह था जब तक मैं उन में था। फिर जब आप ने मुझे उठा लिया

اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾

तो आप उन पर निगरान थे। और आप हर चीज़ देख रहे थे।

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ

अगर आप उन्हें अज़ाब दें तो यक़ीनन वो आप के बन्दे हैं। और अगर आप उन की मग़फिरत कर दें तो यक़ीनन

اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

आप ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये वो दिन है के

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

सच्चों को उन की सच्चाई नफा देगी। उन के लिए जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

हुए। ये भारी कामयाबी है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन और उन तमाम चीज़ों

ع ١٥ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

की सलतनत है जो उन में हैं। और वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ (٥٥) (٦)

اٰيَاتُهَا ١٦٥ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

और २० रूकूअ हैं सूरह अन्आम मक्का में नाज़िल हुई उस में १६५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए और तारीकियों और नूर को

الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾

पैदा किया। फिर वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया, वो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर क़रार देते हैं।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ

वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस ने एक आखिरी मुद्दत का फैसला कर लिया।

وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢ وَهُوَ اللّٰهُ

और मुक़र्रर की हुई आख़िरी मुद्दत अल्लाह के पास है, फिर भी तुम शक करते हो? और वही अल्लाह

فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ

आसमानों में भी है और ज़मीन में भी है। वो जानता है तुम्हारी चुपके से कही हुई बात को और तुम्हारी ज़ोर

وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝٣ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ

से कही हुई बात को और वो जानता है उन आमाल को जो तुम करते हो। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती

مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤ فَقَدْ

उन के रब की निशानियों में से मगर वो उस से ऐराज़ करते हैं। फिर

كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ

उन्हों ने हक़ को झुठलाया जब वो उन के पास आया। फिर अनक़रीब उन के

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

पास उन चीज़ों की खबरें आएंगी जिन का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। क्या उन्हों ने देखा नहीं

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ

के हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन को हम ने क़ुदरत दी थी ज़मीन में,

مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪

उतनी जितनी हम ने तुम्हें क़ुदरत नहीं दी और हम ने उन पर आसमान बरसता हुवा छोड़ा।

وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

और हम ने नेहरें बनाईं जो उन के नीचे से बेहती थीं, फिर हम ने उन को हलाक किया

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦

उन के गुनाहों की वजह से और हम ने उन के बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ

और अगर हम आप के ऊपर कागज़ में लिखी हुई किताब उतारते, फिर वो उस को अपने हाथों से

بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

छूते, तब भी काफिर लोग केहते के ये नहीं है मगर खुला

مُّبِيْنٌ ۝٧ وَ قَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ

जादू। और उन्हों ने कहा के इस नबी पर कोई फरिश्ता क्यूं नहीं उतारा गया? और अगर

اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ

हम फरिश्ता उतारते तो अलबत्ता मुआमला खत्म कर दिया जाता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। और अगर हम उस को फरिश्ता

مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩

बनाते तो उस फरिश्ते को भी मर्द बनाते और हम उन पर वही शुबह डाल देते जिस शुबहे में वो अब हैं।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ

यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों का भी इस्तिहज़ा किया गया, फिर उन में से मज़ाक़ करने वालों को

سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ قُلْ ع ۱۰

उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। आप फरमा दीजिए

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम

الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

कैसा हुआ। आप फरमा दीजिए के किस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं?

قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ

आप फरमा दीजिए ये अल्लाह ही की हैं। अल्लाह ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है। ज़रूर वो तुम्हें जमा

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

करेगा क़यामत के दिन जिस में कोई शक नहीं। वो लोग जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला है, वो

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ

ईमान नहीं लाएंगे। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो रात और दिन में सुकून हासिल करती हैं। और वही

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١٣ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। आप फरमा दीजिए के क्या मैं अल्लाह के अलावा को दोस्त बनाऊँ,

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ

जो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और वो खाना देता है और उसे खाना नहीं दिया जाता।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

आप फरमा दीजिए के मुझे इस का हुक्म है के मैं सब से अव्वल फरमांबरदार बनूँ

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٤ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ

और आप मुशरिकीन में से हरगिज़ न बनें। आप फरमा दीजिए के अगर मैं मेरे रब की नाफरमानी

عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ

करूं तो मैं भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। जिस शख्स से उस दिन

عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

वो अज़ाब हटा दिया जाएगा, तो यक़ीनन अल्लाह ने उस पर रहम फरमाया। और ये खुली कामयाबी है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ

और अगर अल्लाह आप को ज़रर पहोंचाए तो सिवाए उस के कोई उस को दूर नहीं कर सकता।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

और अगर अल्लाह आप को भलाई पहोंचाए तो वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब है। और वो हिक्मत वाला, खबर रखने वाला है।

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِيْدٌ

आप फरमा दीजिए के कौन सी चीज़ शहादत के ऐतेबार से सब से बड़ी है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह! मेरे

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۫ وَ اُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ

और तुम्हारे दरमियान गवाह है। और मेरी तरफ ये कुरआन वही किया गया ताके मैं उस के ज़रिए तुम्हें

بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ

डराऊँ और उन्हें भी डराऊँ जिन को ये कुरआन पहोंचे। क्या तुम गवाही देते हो के

مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

अल्लाह के साथ दूसरे माबूद भी हैं? आप फरमा दीजिए के मैं तो गवाही नहीं देता। आप फरमा दीजिए के वो तो सिर्फ

وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ وقف لازم بخلاف

यकता माबूद है और ये के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِيْنَ وقف لازم

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के वो अपने बेटों को पेहचानते हैं। वो लोग

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ ع ٢

जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला है अब वो ईमान नहीं लाएंगे। और उस से ज़्यादा ज़ालिम

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ

कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस की आयतों को झुठलाए? यक़ीनन

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ

ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और जिस दिन हम उन्हें इकट्ठा करेंगे, फिर हम

لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

मुशरिकीन से कहेंगे तुम्हारे वो शुरका कहां हैं जिन का तुम दावा किया

تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ

करते थे? फिर उन का जवाब नहीं होगा मगर ये के वो कहेंगे के हमारे रब अल्लाह की कसम!

رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا

हम शिर्क नहीं करते थे। आप देखिए के कैसे उन्हों ने अपनी जानों के खिलाफ

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ

झूठ बोला और उन से खो जाएंगे जो वो झूठ गढ़ा करते थे। और उन में से कुछ लोग

مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً

वो हैं जो आप की तरफ कान लगाते हैं। और हम ने उन के दिलों पर परदे रख दिए हैं

اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

इस से के वो उस को समझें और उन के कानों में डाट रख दी है। और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लेंगे

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ

तब भी उन पर ईमान नहीं लाएंगे। यहां तक के जब वो आप के पास आते हैं तो आप से झगड़ते

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ

हुए काफिर लोग केहते हैं के ये नहीं है मगर पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ। और ये

يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ

दूसरों को उस से रोकते हैं और खुद भी उस से दूर भागते हैं। और वो हलाक नहीं करते

اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا

मगर अपनी जानों को और उन्हें पता नहीं। और काश के आप देखते जब वो आग के सामने खड़े किए जाएंगे,

عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا

फिर वो कहेंगे के काश के हम ज़मीन में दोबारा लौटाए जाते और हम अपने रब की आयात को न झुठलाते और हम

وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

ईमान लाने वालों में से होते। बल्के उन के सामने खुल जाएंगे वो जिस को वो

يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ

इस से पेहले छुपाया करते थे। और अगर वो ज़मीन में लौटा भी दिए जाएं तब भी दोबारा वही करेंगे जिस से

وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا

उन्हें रोका गया था और यक़ीनन ये झूठ बोल रहे हैं। और ये केहते हैं के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी,

وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ

और हम मरने के बाद ज़िन्दा कर के उठाए नहीं जाएंगे। और काश के आप देखते जब वो अपने रब के सामने खड़े किए

قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا

जाएंगे तो अल्लाह फरमाएंगे क्या ये हक़ नहीं है? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं? हमारे रब की क़सम! अल्लाह फरमाएंगे

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ۳ ۹

के फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने जिन्हों ने अल्लाह की

بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا

मुलाक़ात को झुठलाया। यहां तक के जब उन के पास क़यामत अचानक आएगी तो वो कहेंगे

يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ

हाए अफसोस हमारी उस कोताही पर जो हम ने क़यामत के बारे में की। और वो अपने गुनाह उठा रहें होंगे

عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ

अपनी पुश्तों पर। सुनो! बुरा है वो बोझ जो वो उठा रहे हैं। और ये दुन्यवी ज़िन्दगी

الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

नहीं है मगर खेल और अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली। और अलबत्ता पिछला घर बेहतर है

لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? यक़ीनन हमें मालूम है के आप को

لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ

ग़मगीन करती है वो बात जो ये केहते हैं, के ये कुफ्फार आप को झूठा नहीं केहते,

وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ

लेकिन ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों

مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى

को झुठलाया गया, फिर उन्हों ने सब्र किया उन के झुठलाए जाने पर और उन को ईज़ा दिए जाने पर, यहां तक के

اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ

उन के पास हमारी नुसरत आई। और अल्लाह के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और यक़ीनन आप के पास

مِنْ نَّبَاِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۴﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ

पैग़म्बरों की खबरों में से कुछ हिस्सा आ चुका है। और यक़ीनन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन का ऐराज़

اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِىَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ

भारी है, फिर अगर आप इस की ताक़त रखते हों के ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लें

اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

या आसमान में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई मोअजिज़ा आप ले आएं। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾ النصف

तो उन को हिदायत पर इकट्ठा कर देता, इस लिए आप जाहिलों में से न हों।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ ط وقف غفران

बात सिर्फ वही लोग क़बूल करते हैं जो कान लगा कर सुनते हैं। और मुर्दों को अल्लाह ज़िन्दा कर के

اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ ط وقف منزل

उठाएंगे, फिर अल्लाह की तरफ वो लौटाए जाएंगे। और ये केहते हैं के इस नबी पर उस के रब की

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً

तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए यक़ीनन अल्लाह इस पर क़ादिर है के वो कोई मोअजिज़ा उतारे

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ

लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और ज़मीन में कोई चलने वाला नहीं

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا

और न कोई परिन्दा अपने बाजुओं के ज़रिए उड़ता है, मगर वो तुम जैसी उम्मतें हैं। हम ने इस किताब

فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ

में कोई चीज़ नहीं छोड़ी। फिर अपने रब की तरफ उन्हें इकट्ठा किया जाएगा। और वो लोग

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ

जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया वो बेहरे हैं और गूंगे हैं, तारीकियों में हैं। जिस को अल्लाह चाहें

يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾

उसे गुमराह कर देते हैं। और जिसे अल्लाह चाहते हैं उसे सीधे रास्ते पर कर देते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारी राए है के अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे पास क़यामत आ जाए,

اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٠ بَلْ اِيَّاهُ

क्या अल्लाह के अलावा को तुम पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो, बल्के तुम उसी को

تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ

पुकारोगे, फिर वही दूर करेगा वो जिस की तरफ तुम पुकारते हो अगर वो चाहेगा

وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝٤١ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ ع ١١

और तुम भूल जाओगे उन को जिन को तुम शरीक ठेहराते थे। और यक़ीनन हम ने रसूल भेजे उन उम्मतों की तरफ

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

जो आप से पेहले थीं, फिर हम ने उन को पकड़ा सख्ती और तकलीफ के ज़रिए, शायद के वो आजिज़ी करें।

يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٤٢ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

फिर जब उन के पास हमारा अज़ाब आया तो उन्हों ने आजिज़ी क्यूं नहीं की?

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا

लेकिन उन के दिल सख्त हो गए और उन के लिए शैतान ने मुज़य्यन किए वो आमाल जो वो

يَعْمَلُوْنَ ۝٤٣ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ

करते थे। फिर जब उन्हों ने भुला दिया उसे जिस के ज़रिए उन्हें नसीहत की गई थी, तो हम ने उन पर

اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ

हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए। यहां तक के जब वो इतराए उस की वजह से जो उन्हें दिया गया था

بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝٤٤ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ

तो हम ने उन्हें अचानक पकड़ लिया, फिर वो मायूस हो कर रेह गए। फिर ज़ालिम क़ौम की जड़

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٥ قُلْ

काट दी गई। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम्हारी क़ुव्वते सिमाअ और तुम्हारी बसारत को ले ले और तुम्हारे दिलों पर

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ

मुहर लगा दे, तो अल्लाह के अलावा कौन माबूद है जो उस को तुम्हारे पास ले आए? आप देखिए

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ

के हम कैसे आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं, फिर भी वो ऐराज़ कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً

तुम्हारी क्या राए है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब अचानक आ जाए या खुल्लम खुल्ला आ जाए

هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ

तो सिवाए ज़ालिमों के कोई और हलाक होगा? और हम रसूलों को नहीं

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर। फिर जो ईमान लाए

وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

और इस्लाह करे तो उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا

और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन्हें अज़ाब पहोंच कर रहेगा इस वजह से के वो

يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ

नाफरमान थे। आप फरमा दीजिए के मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं

وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ

और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं फरिश्ता हूँ।

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى

मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। आप फरमा दीजिए के क्या अन्धा और बीना

وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ ع

बराबर हो सकते हैं? क्या फिर तुम सोचते नहीं हो? और आप उस के ज़रिए डराइए उन को

يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ

जो डरते हैं इस से के वो इकट्ठे किए जाएंगे उन के रब की तरफ, उन के लिए उस के

مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِىٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾

अलावा कोई मददगार और सिफारिशी नहीं होगा, (डराइए) ताके वो डरें।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِىِّ

और आप उन को न धुतकारें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह व शाम

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ

और उस की रिज़ा चाहते हैं। आप पर उन के हिसाब में से कुछ भी

مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ

नहीं है और न आप के हिसाब में से उन पर कुछ है, फिर आप उन को धुतकार दोगे

فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ

तो आप भी ज़ालिमों में से बन जाओगे। और इसी तरह हम ने उन में से एक को दूसरे के लिए

بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

फितना (आज़माईश का ज़रिया) बनाया ताके वो कहें के क्या यही लोग हैं जिन पर हमारे दरमियान में से अल्लाह ने

مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَاِذَا جَآءَكَ

इन्आम फरमाया? क्या अल्लाह क़दर करने वालों को खूब नहीं जानते? और जब आप के पास आएं

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

वो लोग जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप कहिए अस्सलामु अलैकुम, तुम्हारे

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ

रब ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है के जो तुम में से कोई बुरा काम

سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ

कर लेगा नावाक़िफीयत से, फिर वो उस के बाद तौबा कर लेगा और इस्लाह कर लेगा तो यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और इसी तरह हम आयात तफसील से बयान करते हैं और इस लिए ताके

سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ ع ۶ ۱۲

मुजरिमों का रास्ता साफ हो जाए। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूँ उन की

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ

अल्लाह को छोड़ कर के जिन को तुम पुकारते हो। आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हारी ख्वाहिशात के पीछे नहीं चलूंगा,

قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾ قُلْ

यक़ीनन तब तो मैं गुमराह हो जाऊँगा और मैं हिदायतयाफता लोगों में से नहीं हूंगा। आप फरमा दीजिए

اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

यक़ीनन मैं अपने रब की तरफ से रोशन दलील पर हूँ और तुम ने उस को झुठलाया। मेरे पास वो अज़ाब नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ

है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। अल्लाह हक़ को बयान करता है और

وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ

वो बेहतरीन फैसला करने वाला है। आप फरमा दीजिए के अगर मेरे पास वो अज़ाब होता

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ

जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो तो मुआमला मेरे और तुम्हारे दरमियान खत्म कर दिया जाता।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और अल्लाह के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं,

لَا يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

उन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता। और अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो खुश्की और समन्दर में हैं।

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ

और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर अल्लाह उसे जानता है और कोई दाना ज़मीन की

فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا

तारीकियों में नहीं होता और न कोई तर चीज़ और न खुश्क चीज़ है, मगर

فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ

वो साफ साफ बयान करने वाली किताब (यानी लौहे महफूज़) में है। और वही अल्लाह तुम्हें रात में वफात देता है

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ

और वो जानता है उन आमाल को जो तुम दिन में करते हो, फिर वो तुम्हें उठाता है नींद से दिन में

لِيُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ

ताके मुकर्रर की हुई आखिरी मुद्दत पूरी की जा सके। फिर उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है,

٧ ع ٥ ١٣ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब

عِبَادِهٖ وَ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ

है और वो तुम पर मुहाफिज़ फरिश्ते भेजता है। यहां तक के जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त

اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

क़रीब आता है तो उसे हमारे भेजे हुए फरिश्ते वफात देते हैं और वो कोताही नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫

फिर वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हक़ीक़ी मौला है। सुनो! उसी के लिए हुक्म है और वो हिसाब

وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ

लेने वालों में सब से तेज़ हिसाब लेने वाला है। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें खुश्की और

مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ

समन्दर की तारीकियों से नजात देता है, तुम उसी को पुकारते हो आजिज़ी से और चुपके चुपके।

لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

के अगर वो हमें इस से नजात देगा तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से बन जाएंगे।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही तुम्हें उस से नजात देता है और हर तकलीफ से नजात देता है, फिर तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ

शिर्क करने लग जाते हो। आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह इस पर क़ादिर है के तुम पर अज़ाब

عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ

भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या मुख्तलिफ फिरक़े बना कर

شِيَعًا وَّ يُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

तुम्हें खलत मलत कर दे और तुम्हें आपस की लड़ाई का मज़ा चखाए। आप देखिए के हम

نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ

आयतों को कैसे फेर फेर कर बयान करते हैं ताके वो समझें। और आप की क़ौम ने उसे

قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ ﴿٦٦﴾

झुठलाया हालांके वो हक़ है। आप फरमा दीजिए के मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ

हर खबर के लिए एक वाक़ेअ होने का वक़्त है। और अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। और जब आप

الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ

देखें उन लोगों को जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा कलाम करते हैं तो आप उन से ऐराज़ कीजिए

حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

यहां तक के वो उस के अलावा किसी दूसरी बात में लग जाएं। और अगर आप को शैतान

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

भुला दे तो आप याद आने के बाद ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठिए।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

और मुत्तक़ियों पर उन के हिसाब की ज़िम्मेदारी ज़रा भी नहीं,

وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ الَّذِيْنَ

लेकिन नसीहत कर देना है, शायद वो मुत्तक़ी बन जाएं। और आप छोड़ दीजिए उन लोगों को

اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

जिन्हों ने अपना दीन लहव व लइब को बना रखा है और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा है

الدُّنْيَا وَ ذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ

और इस की आप नसीहत करते रहिए के कहीं कोई शख़्स उन आमाल की वजह से हलाक हो जाए जो उस ने किए।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ

के उस के लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और सिफारिशी न हो।

وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

और अगर वो सारे फिदये भी दे देगा तो उस की तरफ से नहीं लिए जाएंगे। यही वो लोग हैं जो

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

हलाक हुए उन आमाल की वजह से जो उन्हों ने किए। उन के लिए गर्म पानी से पीना होगा और दर्दनाक

اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ ع ١٤

अज़ाब होगा इस वजह से के वो कुफ्र करते थे। आप फरमा दीजिए के क्या हम पुकारें अल्लाह को छोड़ कर के

اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا

उन चीज़ों को जो हमें न नफा दे सकती हैं और न हमें ज़रर पहोंचा सकती हैं और हम पलट जाएं हमारी एड़ियों के बल

بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें हिदायत दी उस शख़्स की तरह जिस को शयातीन ने

فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ

खबती बना दिया हो ज़मीन में हैरान हो। उस के दोस्त उस को बुला रहे हों

اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ

हिदायत की तरफ के तू हमारे पास आ जा। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا
और हमें हुक्म दिया गया है के हम रब्बुल आलमीन के सामने झुक जाएं। और ये के नमाज़
الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ط وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾
क़ाइम करो और उस से डरो। और वही अल्लाह है जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे।
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ط
और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ।
وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۬ قَوْلُهُ الْحَقُّ ط وَلَهُ الثلثة
और जिस दिन वो केहता है हो जा, तो वो हो जाता है। उस का केहना हक़ है। और उसी के लिए
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ط عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ط
सलतनत है उस दिन जिस दिन सूर में फूंका जाएगा। वो छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ को जानने वाला है।
وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ
और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने बाप आज़र से
اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ج اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
फरमाया के क्या आप बुतों को माबूद बनाते हो? यक़ीनन मैं आप को और आप की क़ौम को
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ
खुली गुमराही में देख रहा हूँ। और इसी तरह हम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को
مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
दिखाने लगे आसमानों और ज़मीन की सलतनत ताके वो
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ج
यक़ीन करने वालों में से हों। फिर जब उन पर रात छा गई तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारा देखा।
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ج فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾
केहने लगे ये मेरा रब है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाने लगे के मैं डूबने वालों से महब्बत नहीं
فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ج
करता। फिर जब आप ने चमकता हुवा चाँद देखा तो फरमाया ये मेरा रब है।
فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ
फिर जब वो भी डूब गया तो फरमाया के अगर मुझे मेरे रब ने हिदायत न दी, तो मैं गुमराह लोगों

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً

में से हो जाउंगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जगमगाता सूरज देखा

قَالَ هٰذَا رَبِّیْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ

तो फरमाया ये मेरा रब है के ये सब से बड़ा है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाया

يٰقَوْمِ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾ اِنِّیْ وَجَّهْتُ

ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूँ। यक़ीनन मैं ने सब

وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا

तरफ से कट कर अपना रूख कर लिया है उस ज़ात की तरफ जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से हुज्जतबाज़ी की उन की क़ौम ने। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اَتُحَآجُّوْٓنِّیْ فِی اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ

ने फरमाया क्या तुम मुझ से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांके उस ने मुझे हिदायत दी है। और

مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّیْ شَيْـًٔا ۭ وَسِعَ رَبِّیْ

मैं ज़रा भी नहीं डरता उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो मगर ये के मेरा रब चाहे। मेरा रब हर

كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ

चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और कैसे

اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ

मैं डरूंगा उन चीज़ों से जिन को तुम ने शरीक ठेहरा रखा है हालांके तुम नहीं डरते उस से के तुम ने अल्लाह

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ

के साथ शरीक ठेहरा रखा है ऐसी चीज़ों को जिस पर अल्लाह ने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी।

وقف لازم فَاَیُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾

फिर दोनों जमाअतों में से कौन सी जमाअत अमन की ज़्यादा हक़दार है, अगर तुम इल्म रखते हो?

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ

वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ नहीं मिलाया, तो उन्ही

ع ١٥ ١٢ ٥ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

लोगों के लिए अमन है और वही हिदायतयाफता हैं। और ये हमारी हुज्जत है

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ

जो हम ने दी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम के खिलाफ। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं। यक़ीनन

اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۸۳﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ

तेरा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस्हाक़ और याक़ूब (अलैहिमस्सलाम) अता किए।

كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ

सब को हम ने हिदायत दी। और नूह (अलैहिस्सलाम) को हम ने इस से पेहले हिदायत दी और उन्ही की औलाद

وَ سُلَيْمٰنَ وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْسُفَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ

में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी। और इसी तरह

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَ زَكَرِيَّا وَ يَحْيٰى وَ عِيْسٰى وَ اِلْيَاسَ ؕ

हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। और ज़करीया और यहया और ईसा और इल्यास (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी।

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَ يُوْنُسَ

सब के सब सुलहा में से थे। और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत (अलैहिमुस्सलाम)

وَ لُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ

को हिदायत दी। और उन सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी। और उन के बाप दादा

وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ اِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَ هَدَيْنٰهُمْ

और उन की औलाद और उन के भाईयों में से भी हिदायत दी। और हम ने उन को मुन्तखब किया और हम ने उन को हिदायत

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ

दी सीधे रास्ते की। ये अल्लाह की हिदायत है, इस के ज़रिए वो हिदायत देता है जिसे

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

चाहता है अपने बन्दों में से। और अगर ये अम्बिया भी शिर्क करते तो उन से हब्त हो जाते वो अमल जो

يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ

उन्हों ने किए। ये वो थे के जिन्हें हम ने किताब और शरीअत और

وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا

नबूव्वत दी। फिर अगर ये लोग उस के साथ कुफ्र करेंगे तो हम इसे ऐसी क़ौम को सौंप देंगे

لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

जो उस के साथ कुफ्र करने वाली नहीं होगी। यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत दी, तो उन की हिदायत की

اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

आप इक़्तिदा कीजिए। आप फरमा दीजिए के मैं उस पर तुम से किसी अज्र का सवाल नहीं करता। ये तो सिर्फ तमाम जहान

لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا ع ۱۴

वालों के लिए नसीहत है। और उन्हों ने अल्लाह की क़दर नहीं पेहचानी जैसा के उस की क़दर पेहचानने का हक़ है,

مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ

जब के उन्हों ने कहा के अल्लाह ने किसी बशर पर कोई चीज़ नहीं उतारी। आप फरमा दीजिए के किस ने उतारी वो किताब

الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ

जो मूसा (अलैहिस्सलाम) ले कर आए थे जो नूर थी और हिदायत थी इन्सानों के लिए जिस को तुम

قَرَاطِیْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِیْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ

काग़ज़ात में रखते हो, कुछ हिस्से को तुम खोलते हो और बहोत सी चीज़ें छुपाते हो। और तुम्हें इल्म दिया गया

مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَلَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ

उन चीज़ों का जो तुम और तुम्हारे बाप दादा जानते नहीं थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह (ही ने किताब उतारी है), फिर

یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ

आप उन को छोड़ दीजिए उन की दिल्लगी में खेलता हुवा। और ये किताब जो हम ने उतारी है बरकत वाली है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन

بَیْنَ یَدَیْهِ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِیْنَ

किताबों को जो इस से पेहले थीं और इस लिए ताके आप मक्का वालों को डराएं और उन बस्तियों को जो उस के इर्द गिर्द हैं। और जो लोग

یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

आखिरत पर ईमान रखते हैं वो इस पर भी ईमान रखते हैं और वो अपनी नमाज़ों की भी

یُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

पाबन्दी करते हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े

اَوْ قَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَلَمْ یُوْحَ اِلَیْهِ شَیْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ

या यूं कहे के मेरी तरफ भी वही किया गया, हालांके उस की तरफ कोई चीज़ वही नहीं की गई और जो यूं कहे के

مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ

अनक़रीब मैं भी उतारूंगा उस के मानिन्द जो अल्लाह ने उतारा। और काश के आप देखते जब के ये ज़ालिम लोग मौत

الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَیْدِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ

की सख्तियों में होंगे और फरिश्ते अपने हाथ फैलाए हुए होंगे। (और केहते होंगे के) अपनी जानें निकालो।

اَلْیَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ

आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम अल्लाह पर हक़

عَلَى اللّٰهِ غَیْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰیٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۹۳ وَلَقَدْ

के अलावा केहते थे और तुम अल्लाह की आयतों से तकब्बुर करते थे। और यक़ीनन

جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ

तुम हमारे पास अकेले आए हो जैसा के हम ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया था और तुम वो माल जो हम ने

مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

तुम्हें दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ कर आए हो। और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शुफ़आ को नहीं

الَّذِیْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِیْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَیْنَكُمْ

देखते जिन के मुतअल्लिक़ तुम दावा करते थे के ये तुम में शरीक हैं। यक़ीनन तुम्हारे दरमियान जुदाई वाकेअ हो गई

وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝۹۴ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ ع ۱۱

और तुम से खो गए वो जिन का तुम दावा किया करते थे। यक़ीनन अल्लाह दाने को फाड़ने वाला है और गुठली को

وَالنَّوٰى ؕ یُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَیِّتِ

निकालने वाला है। वो ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को निकालने वाला है

مِنَ الْحَیِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۹۵ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

ज़िन्दा से। यही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो? वो सुबह को फाड़ने वाला है।

وَ جَعَلَ الَّیْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

और उसी ने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब का ज़रिया बनाया। ये

تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ۝۹۶ وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ

ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुक़र्रर की हुई मिक़दार है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए

لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ

ताके तुम उन के ज़रिए खुश्की और समन्दर की तारीकियों में राह पाओ। यक़ीनन हम ने आयतें फेर फेर कर बयान कीं

لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ۝۹۷ وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया,

وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ

फिर एक मुस्तक़िल ठिकाना है एक और आरज़ी ठिकाना है। यक़ीनन हम ने आयतें तफसील से बयान कीं ऐसी क़ौम

يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا

के लिए जो समझती है। और वही अल्लाह है जिस ने आसमान से पानी उतारा। फिर हम ने

بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ

उस के ज़रिए हर चीज़ के सब्ज़े को निकाला, फिर हम ने उस से सरसब्ज़ पौदे निकाले जिस से हम तेह बतेह

حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ

दाने निकालते हैं। और खजूर से यानी उस के खोशे से मिले हुए गुच्छे होते हैं

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا

और उस ने निकाला अंगूर के बागात और ज़ैतून और अनार को के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं

وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ

और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं हैं। तुम देखो उस के फल की तरफ जब वो अपना फल लाता है और उस के पकने को देखो।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और उन्हों ने अल्लाह के लिए

شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ

जिन्नात को शुरका क़रार दिया, हालांके अल्लाह ने उन को पैदा किया है और उन्हों ने अल्लाह के लिए बेटे गढ़े और बेटियाँ गढ़ीं

ع ١٢ ١٨ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ

इल्म के बग़ैर। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जो वो बयान करते हैं। अल्लाह आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ

को बग़ैर नमूने के पैदा करने वाला है। उस के लिए औलाद कहाँ हो सकती है जब के उस की बीवी नहीं?

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ

और हर चीज़ उस ने पैदा की है। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। यही अल्लाह तुम्हारा

رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ

रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो हर चीज़ को पैदा करने वाला है, तो तुम उसी की इबादत करो। और वो

عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ

हर चीज़ पर निगरान है। उस का इदराक नहीं कर सकती आँखें और वो आँखों का

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَاۗءَكُمْ بَصَاۗىِٕرُ مِنْ

इदराक करता है। और वो लुत्फ करने वाला, बाखबर है। यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ

आ गईं। फिर जो बसीरत को इस्तेमाल करेगा वो अपने ही फाइदे के लिए है। और जो अन्धा रहेगा तो उस पर उस का वबाल पड़ेगा।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۱۰۴﴾ وَ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ। और इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं

وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِتَّبِعْ

और इस लिए ताके वो कहें के तुम ने तो सबक़ पढ़ लिया है और इस लिए ताके हम उस को बयान करें ऐसी क़ौम के लिए जो समझे। आप उस

مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ

का इत्तिबा कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से वही किया जा रहा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और आप मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ

से ऐराज़ कीजिए। और अगर अल्लाह चाहता तो वो शिर्क न करते। और हम ने आप को

عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۱۰۷﴾ وَلَا تَسُبُّوا

उन पर मुहाफिज़ बना कर नहीं भेजा। और आप उन पर मुसल्लत नहीं हो। और तुम लोग गाली न दो

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ

उन्हें जिन को ये अल्लाह के अलावा पुकारते हैं, वरना वो अल्लाह को गाली देंगे हद से तजावुज़ कर के इल्म न होने की

عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

वजह से। इसी तरह हर उम्मत के लिए हम ने उन के आमाल मुज़य्यन किए। फिर उन के रब की तरफ

مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ

उन का लौटना है, फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। और वो अल्लाह की क़स्में खाते हैं

جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ

अपनी क़स्मों को मुअक्कद कर के के अगर उन के पास मोअजिज़ा आ जाएगा तो ज़रूर वो उस पर ईमान लाएंगे। आप फरमा दीजिए

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

के तमाम मोअजिज़ात सिर्फ अल्लाह के पास हैं और आप को क्या मालूम के जब मोअजिज़ा आ जाएगा

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا

तब भी वो ईमान नहीं लाएंगे। और हम उन के दिलों को उलट पलट करते हैं और उन की आँखों को जैसा

لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ نَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ ع ۱۳

के वो उस पर पेहली मर्तबा में ईमान नहीं लाए और हम उन को उन की सरकशी में भटकता हुवा छोड़ते हैं।